Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 19, Issue No. 4, July-2022, ISSN 2230-7540

वर्तमान शैक्षिक परिदृश्य में स्वामी विवेकानंद के शैक्षिक दर्शन की प्रासंगिकता पर एक अध्ययन

कु० रेनू[1*], डॉ. भूपेंद्र सिंह चौहान[2]

[1] पीएच.डी शोधकर्ता, सनराईस विश्वविद्यालय, अलवर, राजस्थान

[2] सह-प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, सनराईस विश्वविद्यालय, अलवर, राजस्थान

सार - *विविध और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत एक राष्ट्र के रूप में भारत की एक प्रमुख विशेषता है। 19वीं शताब्दी में देश के कई महान शिक्षाविद विकसित हुए और एक आदर्श शिक्षा प्रणाली की स्थापना के लिए अपनी व्यक्तिगत विचारधारा और शिक्षा के दर्शन के साथ आए। दर्शन के इन विद्यालयों में स्वामी विवेकानंद का भारतीय शिक्षा प्रणाली के प्रति योगदान अत्यधिक प्रभावशाली था। अध्यात्म स्वामी विवेकानंद दर्शन की बहुमुखी विशेषता है। वे वेदों की विचारधारा से अच्छी तरह वाकिफ थे। उनका दर्शन हमेशा मानवता की भावना को प्रोत्साहित करता है जो मानव जीवन के हर कदम पर विश्वसनीय था। उनकी विचारधारा मनुष्य के आध्यात्मिक, नैतिक, सांस्कृतिक, शारीरिक विकास का सर्वांगीण विकास थी। स्वामी विवेकानंद का दर्शन भारतीय शिक्षा प्रणाली के पुनर्निर्माण का पथ प्रदर्शक था। उनके विचारों, दर्शन में वेदों का प्रभाव अधिक प्रमुख था, जो आत्मनिर्भरता, आत्म ज्ञान, निडरता और एकाग्रता के रूप में चित्रित किया गया था। स्वामी विवेकानंद के अनुसार "शिक्षा का अर्थ है वह प्रक्रिया जिसके द्वारा चरित्र का निर्माण होता है, मन की शक्ति बढ़ती है, और बुद्धि तेज होती है, जिसके परिणामस्वरूप व्यक्ति अपने पैरों पर खड़ा हो सकता है"। उन्होंने मनुष्य को शरीर, मन और आत्मा का योग माना और कहा कि मानव जीवन के दो पहलू हैं- भौतिक और आध्यात्मिक। आधुनिकीकरण के प्रति उनका दृष्टिकोण यह है कि कुछ भी करने से पहले जनता को शिक्षित किया जाना चाहिए। उनके लिए सच्ची शिक्षा वाहक के लिए नहीं बल्कि राष्ट्र के लिए योगदान के लिए थी। इसलिए वर्तमान परिदृश्य में स्वामीजी के शैक्षिक दर्शन की प्रासंगिकता का अध्ययन और विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है। शोधकर्ता ने द्वितीयक स्रोतों की सहायता से अध्ययन किया है और एकत्रित जानकारी की व्याख्या के लिए सामग्री विश्लेषण पद्धति को अपनाया गया है।*

विशेष शब्द - *भारतीय शिक्षा प्रणाली, वेद, स्वामी विवेकानंद।*

----------X----------

परिचय

विवेकानंद की दृष्टि में, शिक्षा मनुष्य को सांसारिक और आध्यात्मिक जीवन दोनों के लिए तैयार करने में मदद करती है। सांसारिक दृष्टि से उनका मानना है कि,"हम ऐसी शिक्षा चाहते हैं जिससे चरित्र का निर्माण हो, मन की शक्ति बढ़े, बुद्धि का विस्तार हो और व्यक्ति अपने पैरों पर खड़ा हो सके।" आध्यात्मिक दृष्टिकोण से उन्होंने कहा, "शिक्षा मनुष्य में पहले से मौजूद पूर्णता की अभिव्यक्ति है।" वर्तमान परिदृश्य में स्वामी विवेकानंद की प्रासंगिकता उनके द्वारा युवाओं के लिए तैयार किए गए विचारों और लक्ष्यों के साथ है। विवेकानंद मानव मन और बड़े समाज के एक महान पर्यवेक्षक थे। उन्होंने पाया कि शिक्षा की मौजूदा प्रणाली शारीरिक कमजोरी, अज्ञानता, गरीबी, राजनीतिक गुलामी और युवाओं के आगे आने और भारत को आकार देने के लिए सही कदम उठाने के लिए उच्च समय का बोझ है। उन्होंने सांसारिक इच्छाओं से "पूर्ण स्वतंत्रता" का विचार विकसित किया, जिससे हमारे आंतरिक स्व, स्वयं के भीतर मौजूद देवत्व का एहसास हुआ। वह एक अधिक स्वतंत्र समाज, प्रकृतिवादी और आध्यात्मिक दर्शन के समर्थक थे। इस 21वीं सदी में जब भारत के युवा नई समस्याओं का सामना कर रहे हैं, सीमाओं को लांघ रहे हैं और बेहतर भविष्य की आकांक्षा कर रहे हैं, स्वामी विवेकानंद के विचार अधिक प्रासंगिक हो गए हैं। इसलिए हमारी शिक्षा प्रक्रिया में स्वामीजी के दार्शनिक सिद्धांतों को कायम रखने

www.ignited.in

से निश्चित रूप से एक बेहतर राष्ट्र के निर्माण को बढ़ावा मिलेगा।

संबंधित साहित्य की समीक्षा

अभ्यंकर, एस.वी. (1987) ने स्वामी विवेकानंद के विचार और उसकी दार्शनिक नींव के गहन और आलोचनात्मक विश्लेषण पर एक अध्ययन किया, जिसमें मूल्य शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया गया था, अध्ययन के निष्कर्ष थे - विवेकानंद का शैक्षिक विचार मुख्य रूप से अद्वैत वेदांत पर आधारित था जो दार्शनिक शिक्षा के लिए प्रवाहकीय था। शिक्षा से संबंधित अपने भाषणों और लेखों के माध्यम से, विवेकानंद का जोर विशिष्ट बाहरी मूल्यों जैसे- प्रेम, आत्म-साक्षात्कार, भाईचारे, स्वतंत्रता, साहस, श्रम की गरिमा, सत्य, निडरता आदि के विकास पर है। [1]

बनर्जी, ए.के. और मीता, एम. (2015) ने स्वामी विवेकानंद के शैक्षिक दर्शन पर एक अध्ययन किया। अध्ययन प्रकृति में वर्णनात्मक और विश्लेषणात्मक है। अध्ययन के निष्कर्ष

पता चला है कि बिना ज्ञान के सूचना का जबरदस्त विस्फोट, और अपार शक्ति के साथ संयमित नहीं है करुणा, सहिष्णुता, नैतिकता या विनम्रता ने आज की शिक्षा को आपदा का संभावित स्रोत बना दिया है। आज की शिक्षा न केवल मन के तनाव की उपेक्षा करती है बल्कि सभी आध्यात्मिक मूल्यों को भी नकारती है। अंधाधुंध सूचनाओं से भरा दिमाग। उनकी सोई हुई आत्मा आत्म-जागरूक गतिविधि के लिए उत्साहित है।" स्वामीजी की शिक्षा का दृष्टिकोण जीवन-निर्माण, मानव-निर्माण और चरित्र-निर्माण है। एक आदर्श व्यक्ति की उनकी दृष्टि है, जहां "दर्शन, रहस्यवाद, भावना और कार्य के सभी तत्व समान रूप से मिश्रित हैं।" शिक्षा के उनके एजेंडे में मूल्य, नैतिकता, नैतिकता, करुणा, सहिष्णुता, धर्मनिरपेक्षता अधिक है। [2]

गुप्ता, आर.पी. (1985) ने स्वामी विवेकानंद के शैक्षिक विचारों पर एक अध्ययन किया। जांच का अध्ययन करने के लिए स्वामी विवेकानंद के शैक्षिक विचार और शैक्षिक प्रणाली के संगठन के लिए उनकी उपयोगिता की जांच करने के लिए डिज़ाइन किया गया था। इसमें अध्ययन में एक निष्कर्ष के रूप में उल्लेख किया गया है कि विवेकानंद ने छात्रों के शारीरिक और मानसिक विकास पर जोर दिया। स्वामीजी ने शिक्षा को व्यक्ति को जीवन के प्रति तैयार करने का एक उपकरण माना। [5]

गुप्ता, एस. (2021) ने स्वामी विवेकानंद के शैक्षिक विचार और वर्तमान परिदृश्य में इसके प्रभाव पर एक अध्ययन किया। शोध प्रकृति में वर्णनात्मक था, इसने विवेकानंद के दर्शन और सिद्धांतों पर व्यापक रूप से चर्चा की, जो भारतीय राष्ट्र को शिक्षा के मार्ग के माध्यम से प्रबुद्धता की ओर ले जाता है। अध्ययन का निष्कर्ष है कि मानव जाति की सभी समस्याओं का समाधान व्यापक शिक्षा संरचना के माध्यम से है। स्वामी विवेकानंद का मानना है -- शिक्षा प्रणाली की नींव चरित्र निर्माण, नैतिकता, आध्यात्मिकता, सार्वभौमिक एकता, भय से मुक्ति और यह होनी चाहिए। भौतिकवादी जरूरतों को भी पूरा करना चाहिए। उन्होंने परिभाषित किया कि शिक्षा मानव जीवन की सच्चाई को महसूस करने का माध्यम है कि हम सभी एक ही ईश्वर के अवतार हैं। [6]

मिश्रा और शिव। एस (1986) ने स्वामी विवेकानंद के शैक्षिक दर्शन और शिक्षण पद्धति का आलोचनात्मक अध्ययन किया। उन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि स्वामीजी ने शिक्षा को न केवल सूचनाओं के विभिन्न अंशों का संग्रह माना, बल्कि व्यक्ति की आंतरिक क्षमताओं का प्रकटीकरण भी किया। स्वामीजी ने आध्यात्मिक शिक्षा के साथ-साथ व्यावसायिक शिक्षा पर भी जोर दिया। स्वामीजी के अनुसार शिक्षण की विधि में संपर्क, एकाग्रता, आत्म अनुभव, प्रश्न-उत्तर शामिल थे। इनका मूल्यांकन आधुनिक संदर्भ में किया गया था और ये आम तौर पर उपयोगी पाए गए थे। [8]

सरकार, आर. (2015) ने स्वामी विवेकानंद के विचारों और शिक्षा के दर्शन पर एक अध्ययन किया: अविनाशी को बढ़ावा देने का एक तरीका राष्ट्र का विकास। विषयगत पेपर स्वामीजी के विचारों और शिक्षा के दर्शन को उजागर करने का प्रयास करता है। यह विश्लेषण करने की कोशिश करता है भारत में इक्कीसवीं सदी की शिक्षा प्रणाली के आलोक में उनके शैक्षिक विचारों और दर्शन की प्रासंगिकता और आवश्यकता। अंत में यह शिक्षा को एक सक्षम साधन के रूप में समझाने का प्रयास करता है:

राष्ट्र के अविनाशी विकास को बढ़ावा देना। मानवता के उत्थान के लिए, गरीबी, धर्म, जाति, और की परवाह किए बिनापंथ शिक्षा पहले दी जानी चाहिए। स्वामी जी की शिक्षा योजना के माध्यम से ही हम अपनी आने वाली पीढ़ी में सेवा के लिए उत्कृष्टता और करुणा की भावना पैदा कर सकते हैं।गरीबों, अज्ञानियों और दलितों की सेवा करने की अदम्य इच्छा साझा करें, जिनके आधार पर हम बुद्धि, धनी और स्वतंत्र। [10]

अध्ययन का उद्देश्य

1. स्वामी विवेकानंद के शैक्षिक दर्शन का अध्ययन करना।

2. वर्तमान शिक्षा परिदृश्य में स्वामी विवेकानंद के शैक्षिक दर्शन की प्रासंगिकता का विश्लेषण करना।

क्रियाविधि

विधि : शोधार्थी ने वर्तमान अध्ययन के लिए विषयवस्तु विश्लेषण विधि को अपनाया है।

अध्ययन के लिए उपकरण: शोधकर्ता ने अध्ययन के लिए डेटा के द्वितीयक स्रोतों से मदद ली है। स्रोत लेख, किताबें, समाचार पत्र आदि हैं।

स्वामी विवेकानंद का शैक्षिक दर्शन

विवेकानंद के शिक्षा दर्शन के अनुसार, शिक्षा एक सतत प्रक्रिया है और इसमें जीवन के सभी

पहलुओं को शामिल किया जाना चाहिए।

विवेकानंद का शैक्षिक दर्शन वेदांत और उपनिषदों पर आधारित है। शिक्षा केवल पुस्तक सीखने और जानकारी एकत्र करने के बारे में नहीं है। यह चरित्र निर्माण के लिए मानव निर्माण और विचारों के साथ आत्मसात करने की जीवन बनाने की प्रक्रिया है। स्वामीजी के शैक्षिक दर्शन के कुछ बुनियादी विचार नीचे दिए गए हैं:

1. शारीरिक विकासः स्वामी विवेकानंद शिक्षार्थियों के शारीरिक विकास पर जोर देते हैं। उनका कहना है कि शारीरिक शिक्षा हमारी शिक्षा का अभिन्न अंग होनी चाहिए। उनके अनुसार कमजोर मस्तिष्क सोचने और करने में सक्षम नहीं है, हमें अपने मस्तिष्क को प्रशिक्षित और मजबूत करना चाहिए। वह कहते हैं कि हम किताब को याद करने के बजाय व्यायाम, खेल और अन्य शारीरिक गतिविधियों के माध्यम से बेहतर सीखते हैं।

2. नैतिक विकासः स्वामी विवेकानंद के अनुसार शिक्षा को नैतिक विकास को बढ़ावा देना चाहिए। शिक्षा को छात्रों की आंतरिक क्षमताओं को विकसित करना चाहिए ताकि वे दूसरों के लिए प्रेम और करुणा की भावनाओं को विकसित कर सकें।शिक्षार्थियों को सहानुभूति के साथ संवेदनशील बनाने के लिए एक छात्र का नैतिक विकास बहुत महत्वपूर्ण है। इसलिए विवेकानंद ने छात्रों के बीच सही प्रकार के व्यवहार जैसे- दूसरों का भला करना, साहस, निडरता और शक्ति आदि विकसित करने पर जोर दिया ताकि वे एक अच्छे चरित्र का निर्माण कर सकें। उनकी दृष्टि में नैतिकता और धर्म एक ही हैं। भगवान हमेशा अच्छाई के पक्ष में होते हैं।

बौद्धिक और मानसिक विकास:

स्वामी विवेकानंद ने बच्चों के बौद्धिक और मानसिक विकास पर जोर दिया। उनका कहना है कि शिक्षा को छात्रों को आर्थिक रूप से अपने पैरों पर खड़ा करने में सक्षम बनाना चाहिए। उन्होंने उस तरह की शिक्षा का प्रचार किया जिसने शिक्षार्थियों को समस्या-समाधान क्षमता के साथ विकसित किया ताकि वे अपने जीवन के हर कदम पर सफल हो सकें।

4. भावनात्मक विकास: विवेकानंद भावनात्मक कल्याण के बारे में बात करते हैं। भावनात्मक विकास छात्रों को मजबूत बनाता है और शिक्षा को छात्र के भावनात्मक विकास को बढ़ावा देना चाहिए। भावनाओं का समुचित विकास बहुत आवश्यक है; शिक्षार्थियों को समाज में आत्मसात करने की प्रक्रिया के दौरान कई भावनाओं का सामना करना पड़ता है। इसलिए, शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो व्यक्ति को भावनाओं को समझने और तर्कसंगत रूप से कार्य करने में मदद करे।

5. आध्यात्मिक विकास: उनके अनुसार शिक्षा को आध्यात्मिक विकास को बढ़ावा देना चाहिए। शिक्षा को छात्रों में आध्यात्मिकता विकसित करनी चाहिए और नैतिक मूल्यों का विकास करना चाहिए जैसे- साथी भावनाएँ, सार्वभौमिक विभिन्न संस्कृति वाले लोगों के प्रति भाईचारा और सहिष्णुता पृष्ठभूमि और लोकाचार। शिक्षा को छात्रों में आत्म-बलिदान की भावना लानी चाहिए।

विवेकानंद के अनुसार शिक्षा के उद्देश्य:

1. नैतिक, आध्यात्मिक और चरित्र विकास: विवेकानंद कहते हैं कि शिक्षा अच्छे चरित्र का विकास करे, मन की शक्ति को बढ़ाए, छात्रों में बुद्धि का विस्तार करे। स्वामीजी के अनुसार शिक्षा का एक सबसे महत्वपूर्ण उद्देश्य चरित्र निर्माण है जो छात्रों की मानसिक क्षमता और नैतिक चरित्र का विकास करता है। चरित्र आत्म-विकास की नींव है जो नैतिक और आध्यात्मिक विकास की ओर ले जाता है। शिक्षा को छात्रों के सामने उच्च आदर्श प्रस्तुत करना चाहिए और हमारे मन की कुरीतियों को दूर करना चाहिए। उच्च चरित्र का निर्माण कड़ी मेहनत और संघर्ष पर निर्भर करता है। साथ ही उच्च चरित्र निर्माण के लिए पवित्रता, ज्ञान की प्यास, आस्था, मानवता की बहुत आवश्यकता है। एक अच्छे चरित्र के निर्माण में शिक्षक अत्यधिक जिम्मेदार होते हैं और विद्यार्थियों को हर जगह से सही प्रकार का ज्ञान प्राप्त करने के लिए स्व-प्रेरित होना चाहिए।

2. आत्मनिर्भरता और विकास के लिए शिक्षा: विवेकानंद का मानना है कि ज्ञान अंतर्निहित है और स्वयं सभी ज्ञान का स्रोत है। इस प्रकार, आत्म-विकास अधिक महत्वपूर्ण है। शिक्षा का उद्देश्य हमारे मन में निहित ज्ञान की खोज करना है। शिक्षा को छात्रों को उन छिपे हुए गुणों की खोज करने में सक्षम बनाना चाहिए जो पहले से ही व्यक्ति के मन में मौजूद हैं।

www.ignited.in

3. शारीरिक विकास के लिए शिक्षा: विवेकानंद का मानना है कि स्वस्थ शरीर में स्वस्थ दिमाग होता है। उन्होंने शिक्षा के एक महत्वपूर्ण उद्देश्य के रूप में शारीरिक विकास पर जोर दिया। सर्वांगीण विकास के लिए शरीर और दिमाग दोनों का विकास करना जरूरी है। उनका मानना है कि योग एक सटीक विज्ञान है। उनके अनुसार योग हमारे मन की एकाग्रता शक्ति में सुधार करता है और हमारी भावनाओं को नियंत्रित करने में मदद करता है।

4. सार्वभौमिक भाईचारे के लिए शिक्षा: विवेकानंद का कहना है कि शिक्षा का लक्ष्य सभी के बीच सार्वभौमिक भाईचारे की खेती करना होना चाहिए। उनके विचार में कोई व्यक्ति या राष्ट्र समुदाय से अलग अपने आप नहीं रह सकता। एक सार्वभौमिक भाईचारे को शिक्षा के माध्यम से बढ़ावा देना चाहिए ताकि छात्र में अपनेपन की भावना विकसित हो।वह हमेशा सभी राष्ट्रों के साथ सद्भाव और अच्छे संबंध चाहता है। उन्होंने युवाओं को समाज में व्याप्त असमानताओं को दूर करने और समाज में सामाजिक परिवर्तन लाने के लिए प्रेरित किया।

5. जीवन का व्यावहारिक पक्ष: स्वामी विवेकानंद के अनुसार शिक्षा में जीवन के व्यावहारिक पहलू की उपेक्षा नहीं की जानी चाहिए। स्वामीजी ने कहा, "केवल महान सिद्धांतों को सुनने से काम नहीं चलेगा। आपको उन्हें व्यावहारिक क्षेत्र में लागू करना चाहिए, निरंतर अभ्यास में बदलना चाहिए।"

6. धार्मिक विकास के लिए शिक्षा: स्वामी विवेकानंद का कहना है कि धार्मिक विकास शिक्षा का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य है।उसके लिए प्रत्येक व्यक्ति को अपनी पूर्ण वास्तविकता या सत्य को खोजने का प्रयास करना चाहिए। उनके लिए धर्म आत्म-साक्षात्कार है। उन्होंने धर्म का भी

प्रचार किया जो विज्ञान के साथ सामंजस्यपूर्ण है और देशभक्ति पैदा करता है।

7. व्यावसायिक उद्देश्य: स्वामी विवेकानंद के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति को अपनी आजीविका कमाने में आत्मनिर्भर होना चाहिए। उसने दिया| शिक्षा के व्यावसायिक उद्देश्य पर अधिक महत्व। राष्ट्र को समृद्ध बनाने के लिए प्रत्येक व्यक्ति को आत्म निर्भर होना चाहिए। स्वामीजी कहते हैं कि शिक्षा का व्यावसायिक उद्देश्य होना चाहिए जिससे आत्मनिर्भरता, स्वावलंबी और आर्थिक स्वतंत्रता का विकास हो और हम अपने पैरों पर खड़े हो सकें।

वर्तमान परिदृश्य में स्वामी विवेकानंद के शैक्षिक दर्शन की प्रासंगिकता

नैतिक और चरित्र विकास: चरित्र मनुष्य को सत्य का आस्तिक और अनुयायी और एक जिम्मेदार व्यक्ति बनाता है।विवेकानंद ने बहुत पहले महसूस किया था कि मनुष्य को शरीर से स्वस्थ रहते हुए, बुद्धि द्वारा विकसित और उच्च नैतिक चरित्र धारण करना चाहिए।। वर्तमान शिक्षा प्रणाली व्यक्तियों के नैतिक और चरित्र विकास पर जोर देती है। नैतिक और चरित्र विकास के लिए मूल्य शिक्षा अब प्रत्येक शैक्षिक पाठ्यक्रम का एक अभिन्न अंग है।

मानसिक और बौद्धिक विकास: स्वामी जी ने कहा कि भारत के पिछड़ेपन का मुख्य कारण बौद्धिक विकास की कमी है, इसलिए उन्होंने बच्चों के मानसिक और बौद्धिक विकास पर जोर दिया। आधुनिक दुनिया विज्ञान और प्रौद्योगिकी के ज्ञान के साथ तेजी से विकसित हो रही है। भारत भी शिक्षार्थियों में पश्चिमी विज्ञान और प्रौद्योगिकी के ज्ञान को लागू करके अपने विकास में दौड़ रहा है। भारत के वर्तमान शैक्षिक पाठ्यक्रम को शिक्षार्थियों को अच्छा ज्ञान देने के लिए डिज़ाइन किया गया है।

शारीरिक विकास: विवेकानंद के अनुसार हमें अपने शारीरिक आत्म की सुरक्षा और आत्म-साक्षात्कार के लिए एक स्वस्थ शरीर रखना चाहिए। शिक्षा को मनुष्य के शारीरिक विकास को प्रभावित करना चाहिए। आजकल, शारीरिक शिक्षा व्यक्तियों के सर्वांगीण विकास के लिए एक मूलभूत पहलू है। आत्म-साक्षात्कार के लिए ज्ञान योग, भक्ति योग, कर्म योग और राज-योग आवश्यक हैं। स्वस्थ शरीर के द्वारा हम इन योगों को कर सकते हैं। आधुनिक पाठ्यक्रम छात्रों को शारीरिक शिक्षा के अपने रुचि क्षेत्रों में बने रहने और उच्च शिक्षा तक जारी रखने की अनुमति देता है और साथ ही वे विश्व स्तर पर राष्ट्र का प्रतिनिधित्व करने वाली विभिन्न गतिविधियों में भाग ले सकते हैं।

जन शिक्षा: जहां तक जनशिक्षा, स्त्री शिक्षा, व्यावसायिक शिक्षा, धार्मिक शिक्षा और राष्ट्रीय शिक्षा का संबंध है, विवेकानंद ने इन सभी क्षेत्रों में हमारा मार्गदर्शन किया है। जनशिक्षा के बारे में उनका दृष्टिकोण; वह चाहते थे कि सभी बच्चे सीखें, युवा और वयस्क साक्षर हों; चाहते थे कि वे एक सामान्य जीवन जिएं और उन्हें अपनी आजीविका अर्जित करने के लिए प्रशिक्षित करना चाहते थे। उनके इन विचारों ने आज की शिक्षा प्रणाली को सामान्य, अनिवार्य और मुफ्त शिक्षा, वयस्क, शिक्षा, महिला शिक्षा की व्यवस्था करने के लिए प्रेरित किया है। कुछ उदाहरण हैं:प्रारंभिक शिक्षा का सार्वभौमिकरण, आरटीई अधिनियम 2009, दूरस्थ शिक्षा, पत्राचार शिक्षण आदि जो वर्तमान परिदृश्य में बहुत प्रासंगिक हैं।

व्यावसायिक शिक्षा: राष्ट्र से गरीबी को समाप्त करने के लिए, हमारे पास व्यावसायिक शिक्षा और पश्चिमी विज्ञान और प्रौद्योगिकी की शिक्षा का प्रावधान होना चाहिए। आजकल विभिन्न व्यावसायिक केंद्र जैसे: शिक्षण, इंजीनियरिंग, फैशन डिजाइनिंग, पर्यटन, होटल प्रबंधन, फोटोग्राफी आदि पर व्यावसायिक पाठ्यक्रम हैं। लोगों को प्रशिक्षित करने और उन्हें अपना जीवन यापन करने में सक्षम बनाने के लिए लागू किया गया।

सार्वभौमिक भाईचारे और राष्ट्रीय एकता के लिए शिक्षा: विवेकानंद ने सभी व्यक्तियों में ईश्वर को देखा और सार्वभौमिक में दृढ़ता से विश्वास किया। शिक्षा को हमारे भीतर सार्वभौमिक भाईचारे और राष्ट्रीय एकता की भावना विकसित करनी चाहिए। शिक्षार्थी एक दूसरे की विविधता का सम्मान करते हैं। भारत एक धर्मनिरपेक्ष देश है, हम हर त्योहार मनाते हैं, हर संस्कृति, भाषा और जातीयता का सम्मान करते हैं। यह सिखाया जा रहा है, प्राथमिक स्तर से और अंततः हम अपने आप को एक दूसरे के लिए प्यार और भाईचारे की भावना विरासत में लेते हैं जिससे हमारे देश और दुनिया की भलाई की ओर अग्रसर होता है।

निष्कर्ष

शिक्षा एक मानव-निर्माण प्रक्रिया है, ज्ञान और कौशल को बढ़ाने की प्रक्रिया है और यह उसके विचारों और व्यवहार को उचित दिशा प्रदान करने की प्रक्रिया है। स्वामी विवेकानंद एक पूर्वदर्शी थे क्योंकि उन्होंने देश की समस्याओं को समझा था, और वे निर्माता थे क्योंकि उन्होंने नए भारत के निर्माण की नींव रखी थी। उन्होंने ही भारतीय धर्म और दर्शन को आधुनिक संदर्भ में समझाया, वेदांत को व्यावहारिक रूप दिया, समाज सेवा और समाज सुधार को। भारतीय शिक्षा प्रणाली में विवेकानंद का योगदान सराहनीय है। उनके शैक्षिक दर्शन व्यवहार में हैं और वर्तमान शिक्षा परिदृश्य के साथ बहुत प्रासंगिक है। जनता को शिक्षित करने और उन्हें अपने पैरों पर खड़ा करने का उनका विचार समय की मांग है।

संदर्भ

1. आश्रम। ए विवेकानंद राष्ट्र के लिए उनका आह्वान, दिल्ली सेंट सहयोगी रोड, कलकत्ता।
2. बनर्जी। एके (2015)। स्वामी विवेकानंद का शैक्षिक दर्शन। शैक्षिक अनुसंधान और विकास के अंतर्राष्ट्रीय जर्नल। वॉल्यूम। 4(3), पीपी.30-35
3. भारती, एस.वी. (2011)। स्वामी विवेकानंद का शैक्षिक दर्शन। नई दिल्ली: डिस्कवरिंग पब्लिशिंग हाउस।
4. गोस्वामी। डी. (2013), फिलॉसफी ऑफ एजुकेशन। भबानी ऑफ़सेट प्राइवेट लिमिटेड, गुवाहाटी
5. गुप्ता, आर.पी. (1985) "स्वामी विवेकानंद के शैक्षिक विचारों का एक अध्ययन" शिक्षा में पीएचडी, रोहिलखंड विश्वविद्यालय।
6. गुप्ता। एस.(2021)। स्वामी विवेकानंद के शैक्षिक विचार और वर्तमान परिदृश्य में इसके निहितार्थ। जर्नल ऑफ इमर्जिंग टेक्नोलॉजीज एंड इनोवेटिव रिसर्च। वॉल्यूम 8, अंक 9
7. गणित। आर शिक्षा स्वामी विवेकानंद। मद्रास, राष्ट्रपति द्वारा प्रकाशित, श्रीरामकिशन मठ
8. मिश्रा और शिव सरन। (1986)। स्वामी विवेकानंद के शैक्षिक दर्शन और शिक्षण पद्धति का महत्वपूर्ण अध्ययन। शिक्षा में पीएचडी, अवध विश्वविद्यालय।
9. निखिलानंद। एस (1975)। विवेकानंद - आत्मकथा। अद्वैत आश्रम, दिल्ली।
10. सरकार.आर. (2015)। स्वामी विवेकानंद के विचार और शिक्षा का दर्शन: राष्ट्र के अविनाशी विकास को बढ़ावा देने का एक तरीका। स्कॉलर्स इम्पैक्ट-त्रैमासिक रिसर्च जर्नल। खंड 1, अंक-4
11. पालोद और लाल। (2011)। शैक्षिक विचार और अभ्यास। पीपी.366-383। विनय राखेजा। गढ़ रोड, मेरठ-2।
12. फ़ाइल:///सी:/उपयोगकर्ता/उपयोगकर्ता/डाउनलोड/JETIR2109039.pdf

Corresponding Author

कु० रेनू*

पीएच.डी शोधकर्ता, सनराईस विश्वविद्यालय, अलवर, राजस्थान

www.ignited.in